• बाल कविताएं...

अंखियों में आ जा निंदिया...

हो के चांदनी पे तू सवार
अंखियों में आ जा निंदिया...
खूब पढ़ेगी, खूब बढ़ेगी
जैसे कोई चढ़ती बेल,
हर मुश्किल से टकराएगी
जीतेगी जीवन का खेल।
तू पा लेगी वो ऊंचाई
हैरत से देखे दुनिया
अंखियों में आ जा निंदिया...
धीरे-धीरे झूला झूले
जा पहुंचेगी अम्बर पार,
उड़ने वाला घोड़ा लेक
आएगा एक राजकुमार।
डोली ले जाएगा एक दिन
सजकर बैठी है गुड़िया।
अंखियों में आ जा निंदिया...

■ अलका सिन्हा

अंखियों में आ जा निंदिया...

आज चली उसकी मर्जी
ड्राइंग रूम की दीवारों पर,
लिखी रमा ने ए. बी. सी.
न जाने वह चाक कहां से,
नीले रंग की ले आई।
अक्षर टेढ़े-मेढ़े लिखकर,
बड़ी ज़ोर से चिल्लाई।
देखो अक्षर अंग्रेजी के
लिख डाले मैंने दीदी।
चूने से कुछ दिन पहले था,
पुत वाया पापा ने घर।
चाक रगड़ कर उल्टी सीधी,
उसने बना दिए मच्छर।
मम्मी ने रोका उसको तो,
मा री किलकारी हंस दी।
भैया ने पकड़ा जैसे ही,
शोर मचाया जोरों से।
चिड़िया घर बन चुकीं दीवारें,
रंगी चाक की कोरों से।
नहीं किसी की भी चल पाई,
आज चली उसकी मरजी।

■ प्रभुदयाल श्रीवास्तव

• चुटकुला...

डॉक्टर– मोटापे का एक ही इलाज है।
पप्पू– क्या डॉक्टर?
डॉक्टर– तुम रोज एक रोटी खाओ।
पप्पू– ये एक रोटी खाने के बाद खानी है या खाने से पहले?
डॉक्टर साहब बेहोश।

• जानकारी...

पांडा

हम जानते हैं कि सबसे ज्यादा पांडा की तादाद चीन में है। यह जानवर सबसे ज्यादा चीन में पाया जाता है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि पांडा सबसे ज्यादा चीन में ही क्यों पाया जाता है? दरअसल चीन के केंद्र में स्थित भूभाग पांडा के लिए सबसे अनुकूल है। ऐसा माना जाता है कि पांडा चीन के मध्य भाग के मूल निवासी हैं।

ऐसा माना जाता है कि चीन के अलावा दुनिया के किसी देश में पांडा के अनुकूल हालात नहीं हैं। इस वजह से पांडा दुनिया के अन्य हिस्सों में बहुत कम संख्या में हैं, लेकिन चीन के केंद्र में स्थित भूभाग पांडा के लिए बेहद अनुकूल है। इस वजह से पांडा इन क्षेत्रों में काफी तादाद में पाए जाते हैं।

पांडा की गिनती आखिरी बार 2014 में हुई थी। जिसमें पता चला कि पांडा की संख्या पूरी दुनिया में तकरीबन 1900 है। इनमें से तकरीबन 400 पांडा ऐसे हैं जो चिड़ियाघर, सैंक्चुअरी और ब्रीडिंग सेंटर में इंसानों की निगरानी में हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि तकरीबन 50 पांडा ही चीन से बाहर हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो अगर कोई पांडा किसी दूसरे देश में पैदा होता है तो भी उन पर चीन का ही स्वामित्व होगा।

आपकी जानकारी के लिए बताते चलें कि पांडा को पाण्डा भालू भी कहा जाता है, लेकिन क्या आप जानते हैं पांडा का आहार 98 फीसदी बांस से मिलता है। पांडा के पंजे में पांच उंगलियां और एक अंगूठा होता है, जिससे उसे बांस पकड़ने में मदद मिलती है। साथ ही पांडा एकांतवासी जानवर हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि मादा पांडा अपने क्षेत्र में किसी दूसरी मादा को नहीं आने देता। इसके अलावा नवजात पांडा छोटे, गुलाबी, अंधे, और दांतविहीन होते हैं।

• गोनू झा

पंडिताइन का सहारा

जब कोई साधारण व्यक्ति असाधारण सफलता अर्जित कर लेता है तब एक ओर तो उसके प्रशंसकों की बाढ़-सी आ जाती है तो दूसरी तरफ उससे ईर्ष्या करने वालों की संख्या भी बढ़ जाती है।

गोनू झा जब मिथिला नरेश के दरबार के विदूषक नियुक्त हुए तब आम दरबारियों को यह अनुमान भी नहीं था कि मिथिला नरेश गोनू झा से इतना प्रभावित हो जाएँगे कि वे प्रत्येक समस्या पर उनसे सलाह -मशविरा करने लगेंगे। कुछ ही दिनों में गोनू झा ने अपनी मेधा के बूते महाराज के हृदय में अपना स्थान बना लिया और सारे समय में उनकी राय हर मुश्किल की दवा बनने लगी। एक तरह से गोनू झा सभी दरबारियों पर भारी पड़ने लगे जिससे दरबारी उनसे जलने लगे और हमेशा ऐसे अवसर की तलाश में रहने लगे कि कोई मौका मिले तो वे गोनू झा को महाराज की नजरों से गिरा दें ।

एक बार की बात है-मिथिला नरेश बीमार पड़े। उनकी चिकित्सा होती रही, लेकिन बीमारी ठीक होने में वक्त लगा। महाराज बहुत कमजोर और दुबले हो गए। अधिक देर तक बैठने से वे थक जाते। दरबार में वे आते तो थोड़ी देर बैठते, महामंत्री को कुछ निर्देश देते, फिर आराम करने महल में चले जाते।

एक दिन गोनू से बैर रखने वाले दरबारियों ने आपस में मंत्रणा की कि महाराज अभी स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। उनकी स्मरणशक्ति लम्बी बीमारी से क्षीण हो गई है। सामयिक बुद्धि भी मलिन पड़ गई है। महाराज अपनी बीमारी के कारण थोड़ा वहमी भी हो गए हैं। ऐसे में यदि महाराज को कोई ऐसा सुझाव दिया जाए जिसे पूरा करना टेढ़ी खीर हो, आसान तो कतई नहीं हो और किसी तरह वह मुश्किल-सा काम गोनू झा के मत्थे मढ़वा दिया जाए तो समझो कि गोनू झा की मिट्टी पलीद होनी ही है।

एक दिन गोनू से बैर रखने वाले दरबारियों ने आपस में मंत्रणा की कि महाराज अभी स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। उनकी स्मरणशक्ति लम्बी बीमारी से क्षीण हो गई है। सामयिक बुद्धि भी मलिन पड़ गई है। महाराज अपनी बीमारी के कारण थोड़ा वहमी भी हो गए हैं।

ऐसे में यदि महाराज को कोई ऐसा सुझाव दिया जाए जिसे पूरा करना टेढ़ी खीर हो, आसान तो कतई नहीं हो और किसी तरह वह मुश्किल–सा काम गोनू झा के मत्थे मढ़वा दिया जाए...

इस तरह गोनू झा के विरुद्ध षड्यंत्र का बीजारोपण हो गया। धूर्त दरबारियों ने आपस में विचार किया कि महाराज से कहा जाए कि यदि वे प्रतिदिन शेर का एक गिलास दूध पीएँ तो शीघ्र हट्टे-कट्टे हो जाएंगे। जब एक दरबारी महाराज को यह सुझाव दे, तो दूसरे दरबारी उसकी हाँ में हाँ मिलाएँ। और जब महाराज इस सुझाव से प्रभावित हो जाएँ तो उनसे कहा जाए कि शेर के दूध का इंतजाम इस दरबार में केवल गोनू झा ही कर सकते हैं क्योंकि पूरे दरबार में उन जैसी सूझ-बूझ वाला व्यक्ति कोई नहीं है।

दूसरे ही दिन जब महाराज दरबार में आए तब मंत्रणा के अनुरूप दरबारियों ने अपनी तिकड़मी योजना को अमल में लाना शुरू कर दिया। महाराज अपने आसन पर बैठे ही थे कि एक दरबारी ने अपने आसन से उठकर कहा- 'महाराज, आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें, दवा-दारू ठीक से कराएँ... क्षमा करें महाराज! मैं छोटी मुँह बड़ी बात कर रहा हूँ! मगर क्या करूँ, आपकी यह हालत मुझसे देखी नहीं जाती। आप दिनोदिन कमजोर होते जा रहे हैं।'

उसका बोलना बन्द हुआ तो दूसरे दरबारी ने कहा-'माफ करें महाराज! हमारे बंधु ने ठीक ही कहा है। मैं रोज सोचता था कि आपको अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए कहूँ, मगर साहस नहीं कर पाता था। इधर मैं आपको जब भी देखता हूँ तो तरह-तरह की आशंकाएँ मन में आने लगती हैं। परमपिता परमात्मा आपको हर व्याधि से मुक्ति दिलाएँ! मगर महाराज! क्या आपने ध्यान नहीं दिया कि इधर आपका चेहरा लगातार पीला पड़ता जा रहा है?'

इसके बाद तीसरा दरबारी खड़ा हुआ और बोलने लगा-'महाराज! आप प्रजा-पालक हैं। हमारे पालनहार हैं। मिथिला की आत्मा हैं। यदि आपको कुछ हो गया तो पूरी मिथिला अनाथ हो जाएगी।' फिर उसने दरबारियों से ऊँची आवाज में कहा -'भाइयो, यदि आप में से कोई अच्छी सेहत पाने का कोई नुस्खा जानता हो तो वह महाराज को अवश्य बताएँ।' -जारी

• रोचक...

रंगों का अनुभव

जानवर अलग–अलग रंगों का अनुभव नहीं कर पाते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि अलग–अलग जानवर दुनिया को अलग–अलग रंगों में देखती है। गायें लाल रंग नहीं देख सकतीं। गायें द्विवर्णी जीव हैं, इसका मतलब यह है कि उनकी आंखें महज 2 रंगों के विभिन्न रूपों को देख पाती हैं – पीला और नीला। गायों के रेटिना पर कोई लाल रिसेप्टर नहीं होता है। वहीं, भैंस लाल, भूरा या हल्का लाल रंग देख सकता है, लेकिन इसके अलावा अन्य रंगों को देख नहीं सकता है। वहीं, बैलों की बात करें तो बैल स्वस्थ मनुष्यों की तुलना में आंशिक रूप से रंग अंधे होते हैं, इसलिए वे लाल रंग नहीं देख सकते। इसके अलावा शेर की रंग दृष्टि इंसानों की तुलना में कम होती है। हालांकि, शेर रंग देख सकते हैं। शेर नीले और हरे रंग के बीच अंतर कर सकते हैं।

• मधुमक्खियां...

मधुमक्खियां अपनी कॉलोनी के अंदर बातचीत के लिए खास तरीका इस्तेमाल करती हैं। वो अपने साथियों से बात करने के लिए डांस करती हैं। जी हां, इस डांस को वागल डांस कहा जाता है। इस डांस में शहद की दिशा और दूरी दोनों का संकेत होता है। यह नृत्य दिखाता है कि शहद का स्रोत कॉलोनी से कितनी दूर और किस दिशा में है। इस तरह मधुमक्खियां बिना शब्दों के केवल एक डांस के जरिए आपस में संवाद करती हैं, जो विज्ञान के दृष्टिकोण से बेहद शानदार और बुद्धिमान तरीका है।